

वाराणसी विकास क्षेत्र, वाराणसी **अनुमति-पत्र**

सं 60 / जो ० अ०

दिनांक २२.१०.१९

गृह निर्माणार्थ अनुमति-पत्र

यह अनुमति केवल ३० प्र० नगर योजना और विकास अधिनियम १९७३ की धारा १४ के अन्तर्गत दी जाती है, किन्तु इसका अर्थ यह न समझा जाना चाहिए कि उस भूमि के सम्बन्ध में जिस पर मकान बने इस किसी प्रकार या किसी स्थानीय निवास या स्थानीय अधिकारी या व्यक्ति अथवा फर्म के मालिकाना अधिकारों पर किसी का कोई असर पड़ेगा। अर्थात् यह अनुमति किसी के मिल्कियत या स्वामित्व के अधिकारों के विरुद्ध कोई प्रभाव न रखेगी।

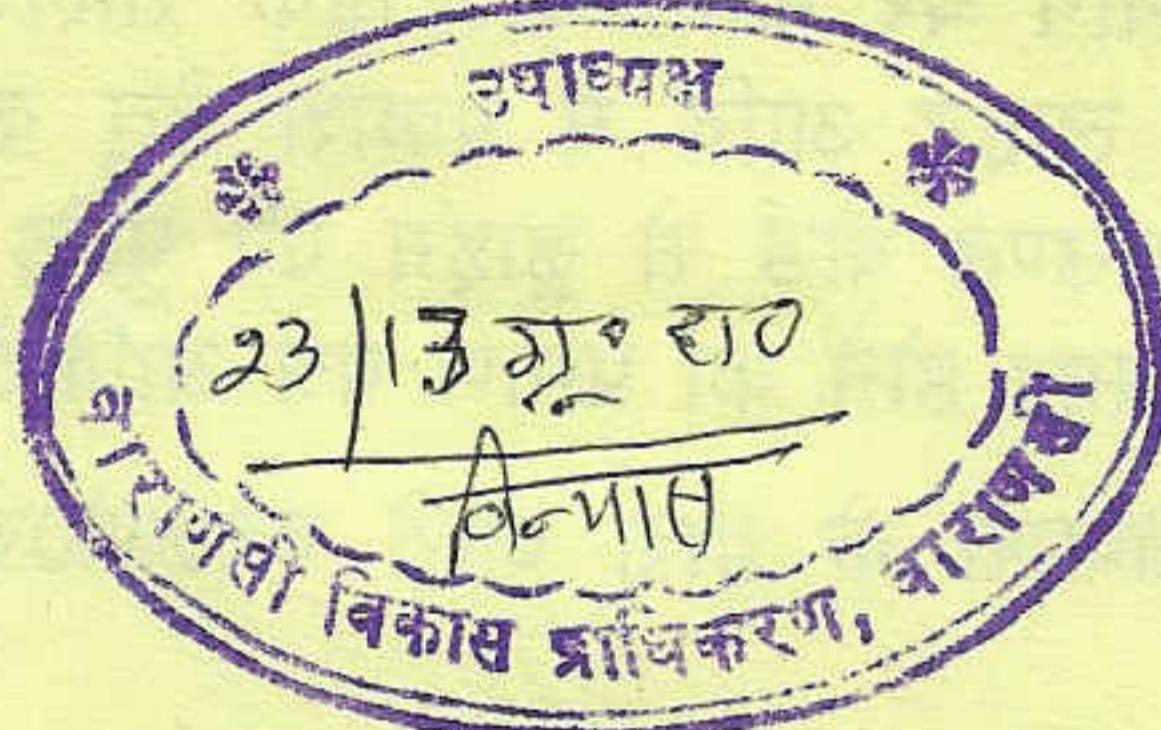
श्री राधवेदु नामा श्रीपाठे १५३ छात्रा उत्तम श्रीपाठे
श्रीपवन्मारु श्रीपाठे १५४ दुर्गा उत्तम श्रीपाठे १५५

पिता/पति का नाम श्री..... आराजी संख्या..... ५२१ कु..... ५२१ रघु मौजा..... पर २९५३
इमां तच्चा अस्ति ५१५ मौजा - सरटरी परामा कल्पा राजा पर २७ ई. ५१२७ कु. दृष्टि पर २९५३
वाड..... द्वारा उभयमेष्ट..... में नक्शे में दर्शित स्थान पर जो प्रार्थना पत्र के साथ प्रस्तुत किये गये हैं, उपाध्यक्ष के चिन्हित भवन चित्र के
अनुसार निर्माण अथवा पुनः निर्माण किया जाय।

मुहर

दिनांक

..20



कृते उपाध्यक्ष

वाराणसी विकास प्राधिकरण

वाराणसी

नोट : 1— यह स्वीकृति पत्र केवल 5 वर्ष की अवधि के लिए है। यदि इमारत आज्ञानुकूल नहीं बनी तो उपाध्यक्ष द्वारा उसे गिरवाया जा सकता है अथवा ऐसे रूप में परिवर्तित किया जा सकता है जो कि समुचित रामङ्गल जावे। इसका पूर्ण व्यय का भार प्रार्थी पर होगा। यदि कोई इमारत बिना उपाध्यक्ष की अनुमति प्राप्त किये निर्माणित रामङ्गल पुनः निर्माणित होगा तो उसके निर्माणकर्ता को दण्ड दिया जायेगा अथवा इस प्रकार के अवज्ञामय इमारत को उपाध्यक्ष द्वारा हटवा दिया जायेगा और उसके हटाने के खर्च का भार उस इमारत बनाने वाले से वसूल किया जायेगा।

2- इस अनुमति पत्र में सड़क, गली या नाली पर ढढ़ाकर प्रोजेक्शन जैसे कि पोर्टिको, बारजा, तोड़ा, सीढ़ी, झाँप, नये अथवा पुराने निर्माण को तोड़कर उस जगह फिर से नये निर्माण की रूपीकृति चाहे उसके लाभ नक्शे में दिखाई भी हो, तभी प्रदान की जायेगी। इन निर्माणों के लिए प्राधिकरण अधिनियम की धारा 293 के अनुसार अनुमति प्राप्त करना होगा।

3- मकान निर्माण से यदि नाली, सड़क की पटरी अथवा सड़क या नाली के किसी भाग (जो मान के अगवाड़े पिछवाड़े अथवा उसके आकार के कारण ढक ली गई हो) को हानि पहुँचे तो यह गृह स्वामी को गृह तैयार हो जाने परदिन के भीतर अथवा यदि प्राधिकरण ने एक लिखित सूचना द्वारा शीघ्र कहा हो तो पहिले उसे अपने खर्च से ग़ारमत कराकर पूर्ववत् अवस्था में जिससे प्राधिकरण को सन्तोष हो जावे, में कर देना होगा।

4- गृह निर्माण के समय इसका भी ध्यान रखना होगा कि भारतीय विद्युत अधिनियम 1973 (अधिनियम इलेक्ट्रिसिटी रॉल्स के नियम 1970) का उल्लंघन किसी दशा में न होना चाहिए। यदि उपाध्यक्ष की जानकारी में ऐसे मामले पाये गये तो वह निर्माण को रोक अथवा हटा सकता है।

5- प्रार्थी को नियमानुसार उपाध्यक्ष को मकान के पूर्ण हो जाने की सूचना मकान समय के भीतर पूर्ण होने के पश्चात् 15 दिन के अन्दर देना होगा यदि सूचना दी गई तो यह समझा जायेगा कि मकान पूर्ण हो गया ।

6- यह अनुमति यदि किसी कारणवश नजूल, प्राधिकरण अथवा जमीनदारी उन्मूलन के भूमि पर निर्माण हेतु दे दी गई हो तो वैध न मानी जायगी और प्राधिकरण को अधिकार होगा कि ऐसे भूमि पर निर्मित भवन आदि हटा दे जिसका कोई हर्जाना प्राधिकरण द्वारा देय न होगा। इसलिए भूमि स्वामी अपनी भूमि के सम्बन्ध में पूर्ण जानकारी प्राप्त करके तभी निर्माण कार्य प्रारम्भ करें।

7- यदि अविकसित क्षेत्र के हेतु किसी प्रकार अनुमति दे दी गई तो वह भी वैध अनुमति पत्र नहीं माना जायेगा तथा ऐसे निर्माण कार्य को विध्वंश कर दिया जायेगा जिसका कोई हजारा नहीं दिया जायेगा।

रवीकृत मानचित्र का विवरण 10792.60
) भू-खण्ड का कुल क्षेत्रफल 971.39 एकड़िम
) भू-उपयोग आवासीय
) मार्गाधिकार का क्षेत्रफल 821.26 चौड़ाई
) वास्तविक भू-खण्ड का क्षेत्रफल 9971.39 एकड़िम
 ;) तलों की सख्ती B+G+16 अपर्याप्त - 49.30 एकड़िम
 ;;) सेटबैक-फन्ट 14:00 m
 दिनर 14:00
 इड-1 14:00
 2 14:00

शर्ते—

- स्थल पर एक बोर्ड लगाना होगा, जिसपर स्वीकृत संबंधित विवरण अंकित होगा।
- टैरेस के 25 प्रतिशत भाग पर फोटो बोल्टाइक सोलर पैनल को स्थापित करना होगा। पैसेज ग्रीन एरिया, स्ट्रीट लाइट आदि में प्रकाश हेतु कनेक्यशन देना होगा। 4. रेन वाटर हार्वेस्टिंगका कार्य वाटर ग्राउण्ड बोर्ड से ड्राइंग की पुष्टि कराकर पूर्ण कराने की जिम्मेदारी होगी। कार्य मानक के अनुसार होने का प्रमाण पत्र आर्किटेक्ट को देना होगा।
- मुख्य अग्नि शमन अधिकारी के द्वारा जारी एन0ओ0सी0 में अंकित प्रतिबन्ध का पालन करना होगा।
- भूकम्परोधी स्ट्रक्चरल ड्राइंग एवं डिजाइन को आई0 आई0 टी0 रुड़की विश्वविद्यालय अथवा निर्दिष्ट तकनीकि संस्थान के स्ट्रक्चरल प्राफेसर से प्रतिहस्ताक्षरित कराकर कदो माह में प्रस्तुत करने के पश्चात निर्माण प्रारम्भ किया जायेगा। इस आशय का शपथ पत्र प्रस्तुत किया गया है।
- भूस्वामित्व पर विवाद की स्थिति में मानचित्र स्वतःनिरस्त माना जायेगा।
- स्वीकृत मानचित्र की छायाप्रति पक्ष को निर्माणाधीन स्थल पर रखना होगा, ताकि मौके पर कभी भी जाँचकर स्थलीय निर्माण का मिलान स्वीकृत मानचित्र से किया जा सके।
- शपथ पत्र में दिये गये शर्तों का अनुपालन करना होगा।
- पक्ष को एन0 जी0 टी0 के संलग्न नियमों का पालन अनिवार्य रूप से सुनिश्चित करना होगा।
- कूड़ा निस्तारण हेतु डर्स्टविन की व्यवस्था करने की जिम्मेदारी आवेदकगण की होगी।
- भवन पूर्ण होने के पश्चात पूर्णता प्रमाण पत्र प्राप्त करना अनिवार्य होगा।
- भवन के निर्माण के साथ समानुपातिक रूप से ई0डल्यू0एस0 / एल0आई0जी0 का निर्माण कराने की जिम्मेदारी आवेदकगण की होगी।
- भवन की ऊँचाई 30.0 मीटर से अधिक है। इस लिये मैकेनिकल वेन्टिलेशन की व्यवस्था करना होगा।
- अपार्टमेंट एक्ट का अनुपालन करना होगा, तथा रेता में पंजीकरण कराने की जिम्मेदारी पक्षगण की होगी।
- निर्धारित अवधि में लेबर सेस शुल्क की अवशेष धनराशि जमा कराने की जिम्मेदारी आवेदकगण की होगी।
- ई0 डल्यू0 एस0 / एल0 आई0 जी0 हेतु अनुवंध की गयी भूमि को तीन वर्ष में क्रय कर विभाग को सूचित करना होगा।

lak

6/2/2019